जीवन दर्शन

श्रीमन्महामहिम विद्यामार्तण्ड
श्रीभागवतानंद गुरु

NOTION PRESS

NOTION PRESS

India. Singapore. Malaysia.

ISBN xxx-x-xxxxx-xx-x

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the author. Any part of this book may be used, reproduced only for educational purposes, not in any other manner whatsoever without written permission from the author, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews. This book is based on personal experiences and studies by the author and should not be considered as a medical guide.

The Author of this book is solely responsible and liable for its content including but not limited to the views, representations, descriptions, statements, information, opinions and references ["Content"]. The Content of this book shall not constitute or be construed or deemed to reflect the opinion or expression of the Publisher or Editor. Neither the Publisher nor Editor endorse or approve the Content of this book or guarantee the reliability, accuracy or completeness of the Content published herein and do not make any representations or warranties of any kind, express or implied, including but not limited to the implied warranties of merchantability, fitness for a particular purpose. The Publisher and Editor shall not be liable whatsoever for any errors, omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause or claims for loss or damages of any kind, including without limitation, indirect or consequential loss or damage arising out of use, inability to use, or about the reliability, accuracy or sufficiency of the information contained in this book.

All Rights Reserved - Author

जीवन दर्शन

श्रीमन्महामहिम विद्यामार्तण्ड
श्रीभागवतानंद गुरु

NOTION PRESS

आर्यावर्त सनातन वाहिनी 'धर्मराज' के सौजन्य से प्रकाशित

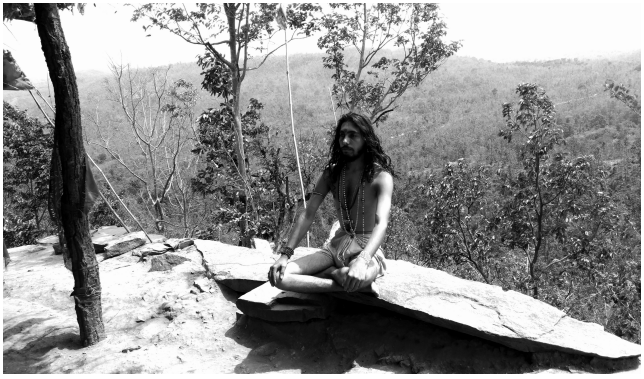

श्रीमन्महामहिम विद्यामार्तण्ड श्रीभागवतानंद गुरु

संक्षेप में

एक कथा पढ़ी थी। एक दिन दो पक्षी शिकार करने के बाद अपने शिकार चोंच में दबाए हुए, एक वृक्ष की एक ही डाल पर आ बैठे। अगल बगल, आराम से भोग लगाने के लिए। एक के मुंह में चूहा था, एक के मुंह में सांप। चूहे ने सांप को देखा, तो भय के मारे थर थर कांपने लगा और सांप ने चूहे को देखा तो उसके मुंह में पानी भर आया। दोनों विस्मृत हो गए कि वे दोनों ही मृत्यु के मुंह में बैठे हैं। जीवन ऐसा ही है। हम प्रकृति के गुणों के इतने वश में हैं कि हम भूल ही जाते हैं कि मृत्यु सामने खड़ी है। सामने का अर्थ यह है कि एक अमीबा का जीवन काल कुछ घण्टों का होगा। ऐसे ही विभिन्न जीवों का जीवनकाल दिन-महीना-वर्ष या वर्षो का होता है। हमारे देखे तो वे मृत्यु के सामने खड़े ही हैं। लेकिन हमें अपनी मृत्यु नहीं दिखायी पड़ती है। युधिष्ठिर ने संभवतः इसी को जीवन का सबसे बड़ा आश्चर्य बताया था।

डॉ त्रिभुवन सिंह
गीता हॉस्पिटल,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

(१)

न मैं स्वयं की चिंता करता हूँ, न विरोधियों की परवाह।
मैं उनकी चिंता करता हूँ जो देश की चिंता करते हैं।

Neither I care about me, nor the opposition.
I care for those, who care the nation.

(२)

यदि तुम्हें यह ज्ञात है
कि तुम्हें सब कुछ ज्ञात नहीं
तो निश्चय ही तुममें सर्वज्ञता प्राप्त करने की क्षमता है।

If you know that you know nothing
then you definitely possess the potential
to become omniscient.

(३)

चिंता और चिता में मात्र एक अनुस्वार का भेद है। जहाँ चिता मृत देह को जलाती है, वहीं चिंता जीवित का दहन करती है।

The difference between tension and pyre is nothing much than a mere dot. The pyre burns the dead whether tension burns the livings.

(४)

मनुष्य को चाहिये कि वह सुख में दुःखी और दुःख में सुखी रहने का अभ्यास करे क्योंकि दोनों ही परिवर्तनशील हैं। स्थिति बदलते देर नहीं लगती।

Man should practice being sad in comfort and happy in sorrow because both are variable. Position's change does not take much time.

(५)

यदि आप किसी संकट में हों तो उससे भी बड़े संकट का आश्रय लें। उदाहरण के लिए भेड़िये से संकट उपस्थित होने पर सिंह का आश्रय लें। यदि सिंह से आश्रय मिल गया तो भेड़िये का भय स्वतः जाता रहेगा और यदि आप असफल रहे तो वैसे भी भेड़िया आपको मारने ही वाला था।

If you are in danger, seek shelter from more dangerous. For example, if you face danger from wolf, seek shelter from lion. If the lion provides you a shelter, then fear from wolf is effortlessly evicted. In case of failure from lion, you were already supposed to be killed by wolf.

(६)

ईश्वर ने दुःख और अज्ञान जैसे किसी तत्त्व को हमारे लिए नहीं बनाया। इन्हें हम बनाते हैं, इनका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। वास्तव में आनंद एवं ज्ञान का अभाव ही दुःख तथा अज्ञान की स्थिति का जनक है।

Ishwara has made nothing like sorrow and ignorance for us. These are created by ourselves. These don't have their own existence. These are just a state in which happiness and knowledge are absent.

(७)

मन न तो जड़ है और न चेतन। यह द्विस्वभावी उत्प्रेरक है। जड़ के साथ जड़ और चेतन के साथ चेतन बन जाता है। इसीलिए इसे चेतन के साथ लगा कर रखो क्योंकि वही तुम्हारा स्वभाव भी है और लक्ष्य भी।

Mind is neither insensible nor conscious. It is hypocritical catalyst. It becomes insensible with insensible components and conscious with the similar. So attach it with the conscious as it is both your nature and goal.

(८)

जीवन समाप्त हो जाये और इच्छाएं बची रहें, तो वह मृत्यु है।
जीवन बचा रहे और इच्छाएं समाप्त हो जाएँ, तो वह मोक्ष है।
अतः जीवन को नहीं, इच्छाओं को समाप्त करो।

When life ends but not the desires,
then it is death.
When desires perish but not the life,
it is salvation.
So don't end up your life, make the desires end.

(९)

गीता का कथन है कि तीन व्यक्तियों का विनाश शीघ्र होता है :- मूर्ख, अश्रद्धालु एवं संशयात्मा। इनके लिए न इस लोक में, न परलोक में, कहीं भी सुख नहीं है।

Geeta states that the doomsday comes early for morons, impious and those who are skeptical as there is nothing like pleasure for these in both earth and heaven.

(१०)

संसार में दो प्रकार के भक्त होते हैं। एक छोटी से छोटी समस्या में भी सीधे भगवान को याद करते हैं, यह सोचकर कि उनके सिवा किसी की शरण नहीं गहना। और दूसरे, बड़ी से बड़ी समस्या में भी भगवान को याद नहीं करते, यह सोच कर कि व्यर्थ ही मेरे कारण भगवान को कष्ट होगा।
भगवान को दोनों प्रिय हैं।

There are two types of devotees. The first one remember Bhagawan in every mere problem, thinking that there is no other than Bhagawan to be approached for shelter. While the others do not remember Bhagawan even in harsh conditions as they think that it will make Bhagawan disturbed for nothing.
Bhagawan loves both.

(११)

जितना समय हम बुराईयों को छोड़ने में लगाते हैं, उतना यदि अच्छाईयों को अपनाने में लगाएं तो कोई कारण नहीं कि जीवन शांति, समृद्धि और सम्मान जैसे शब्दों से कभी खाली होगा।

If the time we spend on giving up the evil would be spent in gaining the goodness, there is no chance that life will not be filled with terms like peace, prosperity and respect.

(१२)

यदि तुम भगवान के लिए कुछ करते हो तो वह कम होने पर भी अधिक फलदायी और अक्षय होता है, पर संसार के प्रति किया गया विशाल कर्म भी कम फलदायी और नश्वर होता है।

The small deeds for Bhagawan become much prosperous and imperishable and but even great deeds done for world become less prosperous and perishable.

(१३)

गीता कहती है, जो प्रारम्भ में कष्ट देकर
बाद में आनन्द दे, वह उत्तम सुख है।
जो प्रारम्भ में आनन्द देकर बाद में कष्ट दे, वह मध्यम सुख है।
जो न प्रारम्भ में, न अंत में आनन्द दे, बस आनन्द का भ्रमपूर्ण
आभास मात्र कराये, वह अधम सुख है।

Geeta says, pain in the beginning and joy at later, is perfect happiness. Rejoice in the beginning and later causing trouble, is pleasantly moderate. Neither at the beginning, nor at the end, gives joy, but only makes confusing impression, is a vile pleasure.

(१४)

जिस प्रकार एक माता ही बच्चे को उसके वास्तविक पिता की पहचान बता सकती है, वैसे ही महामाया ही परमपिता ब्रह्म की वास्तविक पहचान बता सकती है। अतः माया के पुत्र बनकर उनकी आराधना करो, उसे जीतने का प्रयत्न न करो।

The way a mother can tell the child, the identity of his real father, so Mahamaya can tell the true identity of the divine father Brahma. So worship her as the son of Maya, do not try to win her.

(१५)

पुरुष एक बैल के समान है और उसकी स्त्री चक्के के समान।
दोनों के संयोग से ही गृहस्थी की गाड़ी चल सकती है।
चक्र के कारण बैल को अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता
और बैल के कारण ही चक्का गतिमान होता है।
यही बात हर दम्पति को समझनी चाहिए।

Man is like a bull, and his wife is a wheel.
Incidentally, the cart of housekeeping moves
due to both. The wheel, causes less labor for the
bull and the bull causes the wheel to rotate.
Every couple should understand the same thing.

(१६)

आत्मा को न मारा जा सकता है, न काटा या जलाया जा सकता है। फिर भला कोई आत्महत्या कैसे कर सकता है ? हत्या तो देह की होती है। अपने समय को अधर्मयुक्त कर्म में नष्ट करके आत्मकल्याण का प्रयत्न न करना ही वास्तव में आत्महत्या है।

The Atma can neither be killed, nor cut or burned. So how well can an individual commit suicide ? Only the body could be killed. Destroying the time in work full of evil, and not to try for salvation is real suicide.

(१७)

प्रारम्भ से ही हमारी महान परम्परा के तीन सिद्धांत रहे हैं :-
देवताओं को मान, स्त्रियों को सम्मान तथा मातृभूमि की रक्षा।
हर हिन्दू इस बात को अच्छे से समझ ले कि इनके बिना
अस्तित्व बचाने का कोई सटीक मार्ग नहीं।

From the beginning of our great tradition,
there are three principles: -
Value the gods, respect women and defend the homeland. Every Hindu should understand well
that this is no accurate way
to survive except these.

(१८)

मैं प्रचारित अहिंसा को नहीं मानता, मुझमें दया नहीं है, मैं क्रोधी हूँ और क्षमा भी नहीं जानता। मैं सदैव इस ताक में रहता हूँ कैसे अगले का सर्वनाश किया जाय। फिर भी मैं हिन्दू हूँ। क्योंकि मेरे आराध्य भगवान नारायण ने भी अहिंसा, दया, अक्रोध और क्षमा का परित्याग किया जब बात धर्मरक्षा की आयी, और मैं भी वही कर रहा हूँ।

I do not believe in advertised non-violence, compassion is not in me, I'm grumpy and do not know forgiveness. I always live in the glare of the holocaust. Even though I am a Hindu. My adorable Bhagawan Narayana also abandoned non-violence, compassion, and forgiveness when it came to save religion and I'm following the same.

(१९)

पशुओं के पास अपने पूर्वजन्म के स्मरण की विशेष शक्ति होती है जिससे कि वे पूर्वकृत कर्मों पर पश्चाताप कर सकें। मनुष्य के पास कर्मस्वातंत्र्य की विशेष शक्ति होती है जिससे कि वह अपना उद्धार कर सके।

Special power of animals is the remembrance of their past life so that they can repent over past deeds. The special power of human is freedom to act so that he could be emancipated.

(२०)

देवता हमारी आकांक्षाओं और समस्याओं को समझते हैं, इसीलिए वे हमारे देवता हैं। जो देवता ऐसा नहीं करता, वो मेरा देवता नहीं।

Gods do understand our tempts and worries, so they are our gods. The one, who doesn't feels the same is not worthy being my god.

(२१)

आत्मज्ञान ही ब्रह्मज्ञान है, ईश्वर की खोज मत करो, वह कहीं
खोया नहीं है। वह सर्वदा सर्वत्र है। खोज करनी है तो स्वयं की
करो क्योंकि तुम खो गए हो और दुर्भाग्य से
तुम भौतिकता में सर्वव्यापक भी नहीं।

Self realization is the realization of Brahma. Do
not seek Ishwara, he's not missing much.
He is always omnipresent.
If there is something to be found,
seek yourself, because you're lost, and
unfortunately you are not ubiquitous physically.

(२२)

सेवा हृदय से की जाती है तथा व्यापार मस्तिष्क से। जब दोनों के मध्य का भेद समाप्त हो जाता है, सेवा को व्यापार समझा जाता है, तब भ्रष्टाचार का उद्भव होता है।

Service is done from heart and brain monitors the business. When the distinction between the two ends, service is understood as business, it leads to the emergence of corruption.

(२३)

धर्म एवं अधर्म के बीच का अंतर बड़ा सूक्ष्म होता है।
अच्छे उद्देश्य से किया गया गलत कार्य भी धर्म है
और गलत उद्देश्य से किया गया अच्छा कार्य भी अधर्म है।

The difference between righteousness and sin is very subtle. Wrong act for good purpose is considered as doxy but right deed for wrong purpose is iniquity.

(२४)

मनुष्य को परिस्थितियों और बदले समाज का
हवाला देकर धर्म की मर्यादाओं को
लचीला बनाकर बदलने का प्रयास नहीं चाहिए,
क्योंकि यदि बार बार धर्म की मर्यादा ही
बदलती रहेगी तो अधर्म की क्या परिभाषा बचेगी ?

Man should not try to make the
yardsticks of Dharma flexible upon
changing circumstances and
the limitations of the times.
If the dignity of Dharma would
change frequently then what leaves
with the steady definition of Adharma ?

(२५)

बुरा समय मजबूत लोगों को जन्म देता है।
मजबूत लोग अच्छे समय को जन्म देते हैं।
अच्छा समय कमज़ोर लोगों को जन्म देता है।
कमज़ोर लोग बुरे समय को जन्म देते हैं।
बुरा समय फिर से मजबूत लोगों को जन्म देता है
और ये बदलाव का सिलसिला यूँ ही चलता रहता है।

Bad times give birth to strong people.
Strong people give birth to a good time.
Good timing gives birth to poor people.
Weak people give birth to bad times.
Bad times give birth to strong people
and the continuation of the evolution
simply moves on.

(२६)

जिस प्रकार हीटर से गर्मी, फ्रीज़ से ठंडक और बल्ब से प्रकाश देने वाली बिजली एक ही है, भिन्न भिन्न रूपों में विभिन्न विरोधाभासी कार्यों को स्वयं ही संपादित करती है पर स्वयं उनसे निर्लेप रहती है, वैसे ही एक ही परमात्मा भिन्न भिन्न रूपों से आविष्ट होकर अनेक कार्यों को संपादित करते हुए भी उनसे निर्लेप रहते हैं।

As the heat from the heater, the coolness from the freezer and light from the bulb is derived from the same electricity. The power is same on the various contradictory outputs and remains unaffected. Likewise Paramatma also do perform many works using various forms but remains unaffected from them.

(२७)

मैं स्त्रियों का सम्मान नहीं करता।
मैं पुरुषों का भी सम्मान नहीं करता।
मैं केवल व्यक्ति और उसके आचरणों का
सम्मान करता हूँ तथा ऐसा करने के समय
मेरे लिये उसके लिंग का कोई महत्व नहीं।

I have no respect for women.
Also I do not respect men.
The only thing I respect, is the person and his deeds. Gender does not matters to me to respect a human.

(२८)

अच्छाई का महत्व बुराई से ही ज्ञात होता है।
यदि अंधकार न हो तो प्रकाश की परवाह कौन करे।

Importance of good is known from the presence of evil. Who cares for the light if there is no darkness.

(२९)

स्त्रियों को यह बात समझनी चाहिए कि पुरुषों से स्वयं की तुलना करने और पुरुषों की नकल करने से वे न महान कहलायेंगी और न अधिक जागरूक तथा सक्षम। आज स्त्रियों को पुरुष नहीं, बल्कि मात्र एक स्त्री ही बनने की आवश्यकता है, क्योंकि वही उसका महानतम प्रारूप है।

Women should understand that comparing and copying men would never make them respected and much capable. Women should try to be a women, not men, as their most respected form lies only in womanhood.

(३०)

जहाँ ढकना चाहिए, वहाँ का कपड़ा हटाकर, जहाँ नहीं ढकना चाहिए, वहाँ लगा देना ही फैशन कहलाता है।

Which should be covered, remove the cloth there, where there should be uncovered, enclose the same is called fashion.

(३१)

इस संसार के कुछ लोग दिखाने में लगे हैं, और कुछ लोग उन्हें देखने में। पहले को स्त्री तथा दूसरे को पुरुष कहा गया है और समस्या की जड़ यही है।

In this world, some are busy in demonstration while others are in watching it. The first are termed as female while others as male, and this is the root of all the evils.

(३२)

एक विद्वान् कभी स्वयं को विद्वान् नहीं मानता, वैसे ही एक मूर्ख भी स्वयं को मूर्ख नहीं मानता। अपने अंतर्मन में उतर कर देखो कि तुम स्वयं को क्या मानते हो !

The scholar never considers himself as scholar. Likewise a moron never considers himself as a moron. Descend into conscience and look what you consider yourself.

(३३)

प्रश्न पूछना वीरता नहीं, वह तो उत्तर देने में है। महान वह नहीं जिसके पास अधिक प्रश्न, शंका और अज्ञान हो। महान वह है जिसके पास अधिक विवेक, प्रज्ञा और समाधान हो।

Valor is not in asking questions, but lies answering them. Person with many questions, doubts and ignorance is not great but the one who possesses much discretion, wisdom and resolve is great.

(३४)

तुम मुझसे प्रेम न करो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। किंतु मैं ये नहीं मान सकता कि तुम्हारे पास मुझसे घृणा करने का कोई कारण नहीं।

You don't love me, there is no tussle in it. But I can not believe that you don't have any reason to hate me.

(३५)

धारणा एवं विश्वास मनुष्य का स्वभाव है।
जब इस हेतु उचित और कल्याणकारी तत्व नहीं
मिलता है तो धारणा एवं विश्वास हेतु
वह अनिष्टकारी तथा काल्पनिक तत्वों का सहारा लेता है
जो उसके भ्रम एवं विपत्ति का कारण बन जाते हैं।

Perception and trust are the nature of human.
If he doesn't gets appropriates for the welfare
and righteous elements, then he begins to
believe in the evil and relies on fantasy
elements which further lead to
illusion and tragedy.

(३६)

यदि मनुष्य के समक्ष धर्म और अधर्म के मध्य
चयन करने को कहा जाए तो युगानुरूप वह अधर्म का चयन
करेगा। अतः धर्मसत्ता को चाहिए कि वह या तो अधर्म को
खरीद ले या नष्ट कर दे, पर अधर्म का विकल्प न रहने दे।

If the man would be asked to choose between Dharma and Adharma (doxy and iniquity), he will select iniquity according to era. SectPower should, therefore either buy or destroy sin for a must, but let not the sin exist as option.

(३७)

सरकार एक ऐसा उद्योग है, जिसमें आपको बताया जाता है कि
आप निवेशक भी हैं और लाभुक भी, पर वास्तव में
आप कभी भी दूसरे नहीं बन पाते।

Government is an industry in which you are told
that you are an investor and profit holder too,
but in real, you would never find yourself on
another position.

(३८)

मैं अकेला हूँ,
रेगिस्तान में खिले फूल की तरह,
झरने के पानी की तरंगों की तरह ...
क्योंकि मैंने भीड़ की अपेक्षा सत्य को चुना ...

I am alone, like flowers bloom in the desert,
like the waves of spring water ...
because I chose the truth
instead of the crowd ...

(३९)

हर दृश्य सत्य तथा हर अदृश्य असत्य नहीं होता।
दृश्य के असत्य तथा अदृश्य के सत्य होने की
सम्भावना सर्वदा समान होती है।

Neither every scene is true nor every invisible is a lie. The chances of seen being unreal and invisible being real are always equal.

(४०)

मनुष्य जिज्ञासा और शोध छोड़ चुका है। असत्य पर
अंध-विश्वास और सत्य पर अंध-अविश्वास ही उसे
विनाश और भ्रम के चक्र में डालता है।

Man has left curiosity and research. Blind beliefs on apocryphal and blind incredulity of truth only put him in the cycle of destruction and delusion.

(४१)

सब कुछ विचारों से ही निर्मित होता है। विचार विश्वास बनते हैं
जो भावना का निर्माण करते हैं। भावना कर्म में बदलती है और
कर्म परिणाम में परिवर्तित होते हैं, और इस प्रकार एक व्यक्ति
पराजय के अवशेषों से विजेता बन जाता है।
अतएव हमें सर्वदा महापुरुषों के द्वारा बताए गए
श्रेष्ठ विचारों का आश्रय लेना चाहिए।

Everything starts with a thought. A thought becomes a belief which creates feelings. Feelings drive us to action and from our actions come results. So, one becomes a winner from the ruins of a loser. So, we should always follow the thoughts of great people.

(४२)

सत्संगति से भक्ति, भक्ति से ज्ञान, ज्ञान से वैराग्य, वैराग्य से ब्रह्मात्मैक्य बोध, और ब्रह्मात्मैक्य बोध से मोक्ष की सिद्धि होती है। समाज में अभाव मूल का है जिसके फलस्वरूप शाखा, पत्र, पुष्प फलादि की कल्पना निरर्थक सिद्ध होती है। तदनुसार सत्संगति के अभाव में क्रमशः भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, ब्रह्मात्मैक्य बोध और मोक्ष की कल्पना निरर्थक सिद्ध होती है। अतएव मनुष्य को चाहिए कि वह समाज में सत्पुरुषों का सम्मान करते हुए उसकी अधिक से अधिक संगति करे और उनके चरित्रों से शिक्षा ग्रहण करते हुए अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे।

With the company of good persons, devotion emerges. From devotion, comes knowledge, which further leads to dis-attachment from world. This activates unification of Atma and Brahma, after realizing which, one attains salvation. The society lacks the root. Without the root, it's unworthy to imagine for branches, leaves, fruits or flowers. So, without the company of good persons, it's unworthy to wish for devotion, knowledge, dis-attachment from world, unification of Atma and Brahma or salvation. A person should respect good people, must build company with them and gaining inspiration from their character,
develop the way to welfare.

(४३)

जो लोग (विशेषतः सौम्यवादी हिंदू)
इतने बड़े ब्रह्मज्ञानी हैं कि उन्हें
म्लेच्छों के आतंक में ईश्वर की प्रेरणा
और इच्छा दिख जाती है...
मैं पूछता हूँ कि जब अन्य हिन्दू,
धर्म की रक्षा के लिए उनका प्रतिरोध करते हैं
तो उसमें इन ब्रह्मज्ञानियों को
ईश्वर की इच्छा क्यों नहीं दिखती ?

The people (especially mild Hindus)
are so big theologians that
they see the inspiration and desire of God
in the terror of the *Mlechchhas* ...
I ask that when other Hindus,
oppose them to protect their religion,
why do those salvation-minded
people not see the desire of God in it?

(४४)

यह कितनी विडंबना की बात है कि हर हाथी में गणेश और बन्दर में हनुमान के दर्शन करने वाला मनुष्य हर नारी में सीता और हर पुरुष में राम नहीं देख पाता। यदि ऐसा हो जाये, तो यह संसारशत्रु और भय से मुक्त हो जाएगा।

It is a matter of irony that the person who sees Ganesha in every elephant and Hanuman in monkey can't see Sita in every woman and Rama in every Man. If it could be so, the world would become free from foe and fear.

(४५)

अस्तित्व ही महत्वपूर्ण है। जो अस्तित्व को चिरस्थायी एवं सुखद बनाये, वही वास्तव में विज्ञान है। शेष सब मात्र मूर्खता है।

Existence is important. The one, which makes existence long lasting and comfortable is science. Rest is stupidity.

(४६)

लोकतंत्र में राजनेता एक ही सिक्के को घुमा घुमा कर दिखाते हैं ताकि जनता को विकास एवं परिवर्तन का विश्वास हो, जबकि वे दोनों हाथों से स्वार्थसिद्धि कर सकें।

In a democracy, politicians flip the same single coin every time, so that the public would believe in development and change while politicians would fulfill their selfishness.

(४७)

निग्रहानुग्रहैः सम्यग्यदा नेता प्रवर्तते।
तदा भवन्ति लोकस्य मर्यादाः सुव्यवस्थिताः॥
जब नेता उचित प्रकार से निग्रह - दण्ड देना, अनुग्रह - कृपा
करना प्रारम्भ करते हैं, तभी समाज में सारी मर्यादाएं व्यवस्थित
होती हैं। ऐसा महाभारत में श्रीहनुमान् जी ने
भीमसेन को कहा है। नेता कौन है ?
आदिगुरु शंकराचार्य जी ने कहा - जगद्यन्त्रनिर्वाहको नेता।
संसाररूपी यन्त्र का निर्वहन (सञ्चालन) करने वाला नेता है।

When the leaders begin to, punish and show grace in an appropriate manner - only then all the dignities in the society are well arranged. In the Mahabharata, Shree Hanumanji has said this to Bhimsen. Who is Neta (Leader) ?
AdiGuru Shankaracharya preaches -
The world is Yantra (Automatic Machinery).
The one who drives it is a Neta.

(४८)

जिसके पास धर्मशास्त्र का बल न हो, ऊपर से आचरण भी संदिग्ध हो, मात्र धनबल पर उसकी कीर्ति अधिक दिनों तक सुरक्षित नहीं रहती है।

The person who beholds no support of DharmaShastra, and evenprojects suspicious activities is unable to protect his glory for much time only with the power of wealth.

(४९)

हर प्रकार से अयोग्य व्यक्ति ही भगवान के योग्य होता है। कम से कम उसमें किसी योग्यता का अभिमान तो नहीं होता। छोटा सा अभिमान भी बड़ी योग्यताओं को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जैसे एक बूंद नींबू का रस पूरे कड़ाह के दूध को विकृत कर देता है।

In every way the ineligible person is worthy of Bhagawan. At least there is no pride of any qualification in him. Little pride can also destroy mighty abilities in the same way as a drop of lemon juice distorts the milk of whole bowl.

(५०)

एक ओर तुम बिना स्नान किये मन्दिर में नहीं घुसते,
मन्दिर में थूकते नहीं, मंदिर में जूते नहीं पहनते।
दूसरी ओर देवताओं के नाम पर बलि की आड़ में
सैकड़ों निरपराध जीवों की हत्या करके मंदिर को कसाईखाना
बना देते हो। यदि इसके बाद भी तुम स्वर्ग जाने की बात करते
हो तो नरक किनके लिए बना था ?

On one hand, you do not enter the temple
without bathing, do not spit in the temple,
do not wear shoes in the temple.
On the other hand, you kill hundreds of
innocents in the guise of sacrifices in the name
of deities, making the temple a slaughterhouse.
If after this, you still talk about going to heaven,
then hell was made for whom ?

(५१)

भ्रम से ही भय होता है। यह भ्रम ही है कि आप देह हैं।
यह भी भ्रम ही है कि आपकी मृत्यु होती है।
आपको ज्ञात नहीं कि आप देह नहीं हैं, और मृत्यु देह की होती है। इसीलिए भ्रम से भय होता है, ज्ञान से अभय होता है।

Fear comes from confusion. It is illusion that you are body. It is also an illusion that you die. You are not aware that you are not a body, and death is of the body. That's why fear comes from illusion, while knowledge brings intrepidity.

(५२)

दया एवं क्रोध, दोनों उचित पात्र एवं स्थान के लिए हैं। कुपात्र के लिए प्रयुक्त होने पर दोनों प्रयोक्ता के ही विनाश का कारण बनते हैं। पापी के प्रति दया एवं सज्जन के प्रति क्रोध विध्वंसकारी परिणाम देते हैं।

Both kindness and anger are for the right character and place. These become the cause of destruction for the user when used for the wrong guy. Kindness for the sinner and anger for the gentleman leads to destructive results.

(५३)

ज्ञान सुख का मूल नहीं है, वह तो मात्र जिज्ञासा का अंत है। सुख का मूल तो संतोष ही है क्योंकि वही कामनाओं का अंत है। हां, ज्ञान का प्रयोग संतोष की प्राप्ति हेतु अवश्य कर सकते हैं।

Knowledge is not the root of happiness, it is only the end of curiosity. The essence of happiness is contentment only because it is the end of the desires. But yes, the use of knowledge can certainly achieve you satisfaction.

(५४)

कथित आधुनिक समाज में लोग मनुष्यों के साथ पशु के समान
और पशुओं के साथ मनुष्यों के समान व्यवहार कर रहे हैं।
मर्यादा का यह अतिक्रमण समस्त सभ्यताओं के
नाश का कारण बनेगा।

In this so called modern society, people treat humans like animals and treat the animals like humans. The overruling of modesty would lead to end of civilizations.

(५५)

सनातन एवं हिंदुत्व के मध्य उतना ही भेद है जितना सूर्य और प्रकाश के मध्य.. अग्नि एवं ऊष्मा के मध्य, जल एवं शीतलता के मध्य। ब्रह्मांड का स्वभाव सनातन है एवं
सनातन का स्वभाव हिंदुत्व...

The only distinction between Sanatan and Hindutwa is just like between the sun and the light, between the fire and heat, between water and coolness. The nature of the universe is eternal Sanatan and the nature of
Sanatan is Hindutwa.

(५६)

जो उचित है वही धर्म है।
जो कल्याणकारी है, वही उचित है।
जो निःस्वार्थ है, वही कल्याणकारी है।
जो सुख और दुःख को समान समझे वही निःस्वार्थ है।
इस प्रकार धर्म की केंद्रित परिभाषा निःस्वार्थता ही है।

That which is justified, is Dharma.
That which is for welfare, is justified.
Who is selfless, that is the welfare.
The one who feels happiness and sorrow
similarly is selfless. Thus, the centered
definition of Dharma is selflessness.

(५७)

एक मच्छर के द्वारा भूख मिटाने के लिए दी गयी हल्की सी
अहानिकारक पीड़ा के बदले मनुष्य उसे मार डालता है।
वही मनुष्य मात्र अपने जिह्वा की तृप्ति के लिए
कई निर्दोष प्राणियों को बर्बरता से मार कर खा जाता है।
इसके बाद मनुष्य ईश्वर को दोष देता है कि उसके जीवन में
समस्या और असफलता क्यों है ! और उत्तर न मिलने पर ईश्वर
के ही अस्तित्व पर प्रश्न लगाकर फिर अपना चमड़ा बढ़ाने के
लिए किसी और के चमड़े को चबाने में मग्न हो जाता है।
यदि यही मनुष्यता है तो फिर राक्षस की क्या परिभाषा है ?

In lieu of mild harmless pain given by a mosquito to satisfy hunger, a person kills it. By the same person just for the fulfillment of his tongue, many innocent creatures are brutally killed and eaten. After this, man blames Ishwara and asks why there is a problem and failure in his life! And if the answer is not found, then after questioning the existence of Ishwara, he becomes engrossed in chewing someone else's flesh to increase his own flesh. If this is humanity, then what is the definition of demon?

(५८)

मनुष्य अपने जीवनकाल में ही अनेक भौतिक आकांक्षाओं के प्रति अपने मन का विभाजन करके उसे संकीर्ण बना लेता है। संकीर्णता के कारण उसकी आत्मप्राज्ञदूरदर्शिता शनैः शनैः क्षीण होने लगती है। संकीर्णता से ग्रस्त मन के द्वारा वह तत्वज्ञानियों के समक्ष नानाविध तर्क कुतर्कों के साथ अपनी नैसर्गिक जिज्ञासा की शांति हेतु प्रस्तुत होता है तथा असफल होने की स्थिति में आत्मचिंतन के स्थान पर तत्वज्ञानियों के ज्ञान पर ही प्रश्नचिन्ह लगा बैठता है।

Man divides his mind towards many material aspirations during his lifetime and makes it narrow. His self-conscious foresight begins to fade into silence due to narrowness.Through a mind obsessed with parochialism, he presents to the philosophers with a wide range of reasoning arguments for peace of his natural curiosity, and in the event of failure, questions the knowledge of the metaphysicians, instead of self-belief.

(५९)

स्वयं को अविनाशी जानने के बाद मृत्यु का कोई भय नहीं होता। किंतु यह जानना मात्र पढ़ने, सुनने या सोच लेने से नहीं होता, इसीलिए भय बना रहता है। इसे स्वभाव में स्थापित करना पड़ता है। स्वभाव में स्थापित करना ही मुख्य सूत्र है क्योंकि इसी से विवेक की दृढ़ता सम्भव है।

जैसे वाहन चलाने का गुण जब स्वभाव में आ जाता है तो बात करते हुए या कहीं अन्यत्र ध्यान रहते हुए भी वाहन का संचालन चेतन स्वयं करने लगता है, चित्त कहीं और लगा रहे, फिर भी लोग स्वभावाश्रित होकर चलने लगते हैं, ऐसे ही जब आत्मा और देह की पृथकता का बोध होगा तो मृत्युभय भी स्वतः समाप्त हो जाएगा।

There is no fear of death after knowing that the self is imperishable. But such knowing does not happen by just reading, listening or thinking, that's why fear remains. It has to be established in nature. Establishing in nature is the main formula because it is the way to strengthen conscience.

Just as when the quality of driving a vehicle comes into nature, the conscious person starts to operate the vehicle himself while talking, or while meditating elsewhere. While the mind is engaged somewhere else, yet people start walking spontaneously. Similarly when there is a feeling of separation of soul and body then fear of death will also automatically come to an end.

(६०)

प्रेम की मात्र दो ही अवस्थाएं हैं :- वह या तो है, या नहीं है।
क्रिया करने वाले के सापेक्ष न होने से प्रेम ज्ञान के समान नहीं
है। अर्थात् ज्ञान क्रिया करने वाले की अपेक्षा रखता है,
परन्तु प्रेम किसी के कार्य की अपेक्षा नहीं रखता।
इसका कारण यह है कि एक व्यक्ति किसी से प्रेम करता है,
परन्तु क्यों करता है, वह इसका यथावत् कारण नहीं बता
सकता। ऐसे ही बहुत से लोगों से हमारा प्रेम नहीं है
(द्वेष भी नहीं है, पर प्रेम भी नहीं),
परंतु क्यों नहीं, इसका भी कोई यथावत् कारण हम नहीं बता
सकते। प्रेम मात्रातीत है, निमित्तातीत भी है।
वह या तो है, या नहीं है।

There are only two stages of love: -
Either it is or is not.
Love is not same as knowledge as it's not relative to the performer. Knowledge expects the performer, but love does not expect anyone's work. The reason for this is that a person loves someone,
But why he does so, he cannot give the exact reason for it. Like, we do not love many people (Not even malice, but not love),
But why not, we cannot give any exact reason for this. Love is quantityless, it is also timeless.
Either it is, or simply not.

(६१)

ऊष्मा और अग्नि एक दूसरे के आश्रय में नहीं है। वे दोनों वस्तुतः दो हैं भी नहीं। ऊष्मा रहित अग्नि की अग्नि संज्ञा है ही नहीं। ऊष्मा की अनुभूति अग्नि के बिना नहीं और ऊष्मा के बिना अग्नि का अस्तित्व नहीं इसीलिए अग्नि और ऊष्मा पृथक् नहीं। यही बात ब्रह्म और माया, देव और देवी के संदर्भ में समझनी चाहिए।

Heat and fire are not in each other's shelter. They both are not even two. Fire is not the name of fire without heat. The feeling of heat is not without fire and fire does not exist without heat, hence fire and heat are not separate. The same thing should be understood in the context of Brahma and Maya, Deva and Devi.

(६२)

तुलना का आधार देवताओं की शक्ति से नहीं होता है, अपितु उनके स्वरूपादि के द्वारा किये जाने वाले कर्तव्यों के लिए अपनाए गए तीनों गुणों के मध्य की तुलना होती है। अन्यथा ध्यान रहे कि श्रीहरि भी शिवलिंग का अंत न पा सके और महादेव भी विष्णु भगवान से युद्ध में जीत न सके। वस्तुतः तुलना दो भिन्न तत्वों में होती है। दो अलग अलग व्यक्तियों में होती है। दो अलग अलग वस्त्र पहन कर अलग अलग कर्म करने वाले एक ही व्यक्ति में कैसी तुलना सम्भव है ? पुलिसकर्मियों की वर्दी केवल रक्षा के समय है। घर पर सामान्य कपड़े पहनते हैं। तो क्या दोनों में तुलना सम्भव है ? नहीं न। क्योंकि दोनों कपड़े पहनकर दोनों अलग अलग कर्म करने वाला है तो एक ही व्यक्ति। यदि तुलना होनी ही है तो कपड़ों की होगी, न कि व्यक्ति की, क्योंकि वह तो अद्वितीय है।

The comparison is not based on the power of the gods, but rather the comparison happens between the three qualities adopted for the duties performed by their appearances. Otherwise keep this in mind that even SriHari could not get the end of Shivling and Mahadev could not win in battle with Bhawawan Vishnu.

In fact, the comparison is only possible between two different elements. It occurs in two different individuals. How is it possible to compare the same person wearing two different clothes and performing different actions? The policemen's uniform is only at the time of defense while they wear normal clothes at home. So is it possible to compare the two? No. Because both of them are going to do different things while wearing the same clothes being one person. If there is to be a comparison, then between the clothes, not in context to the person, because he is unique.

(६३)

गणेश जी ही वैकुंठ में विष्वक्सेन कहाते हैं। शिव जी ही वैकुंठ में नारायण और पार्वती ही वैकुंठ में लक्ष्मी कहाती हैं। नंदी ही वैकुंठ में गरुड़ हैं। जिस काल, विधि, प्रसंग में ईश्वर के जिस रूप की प्रतिपाद्यता बताई गई है उस काल एवं विधि में उसका ही ध्यान और उच्चारण करना चाहिए, इसीलिए ऐसा है।

Ganesha is called Vishwaksen in Vaikuntha. Bhagawan Shiva is called Narayana in Vaikuntha and Parvati is Lakshmi in Vaikuntha. Nandi is Garuda in Vaikuntha. The time, method, context in which the formality of Ishwara is described, in that period and method, it should be meditated and pronounced the way it is.

(६४)

पुराण परस्पर विरोधी नहीं है। वे तो केवल आपको ठोंक पीट कर स्थिर एवं दृढ़ बनाते हैं। उनमें कोई मतभेद भी नहीं, केवल आपको उलझा कर वे आनन्द लेते हैं। आनन्द इसीलिए कि उलझ कर यह व्यक्ति और भी अधिक चिंतन करेगा और सत्यबोध करके कल्याण का भागी बनेगा।

Puranas do not contradict. They only make you stable and firm by being harsh over you. There are no differences among them, they enjoy only by confusing you. They enjoy this because by think entangling this person will contemplate even more and this will become a part of welfare of his life by realizing the truth.

(६५)

अनन्यता का अर्थ बाकी से विरोध करना नहीं होता, अनन्यता तो सबों के साथ अपने इष्ट का दर्शन कराती है। अनन्यता किसी को नकारती नहीं, अपितु सर्वत्र अपने इष्ट के भाव को स्थापित करती है। भगवान विष्णु के प्रति अनन्य भक्ति श्रीशिव जी को नकार कर नहीं प्राप्त हो सकती, वह तो श्रीशिव जी में नारायण के दर्शन करके मस्तक झुकाने से ही प्राप्त होगी।

सम्पूर्ण जगत की भूमि को ढक कर चलने से अच्छा है कि पैरों को ही ढकने के लिए जूते पहन लिए जाएं। वैसे ही सबों को नकार कर अनन्यता स्थापित करने के प्रयास से अच्छा है कि सबों को स्वीकार करके उनमें ही इष्ट के दर्शन को स्थापित किया जाय।

Uniqueness does not mean opposing the rest, this makes everyone see their favorite. Uniqueness does not rule anyone out, but everywhere it establishes its sense of favor. An exclusive devotion to Bhagawan Vishnu cannot be attained by denying Shree Shiva, it will be attained by bowing head before him after seeing Narayana in Shree Shiva. Wearing shoes to cover the feet while walking is better than covering the land of the entire world. In the same way, by trying to establish exclusivity by denying all, it is better to accept all and establish a philosophy of viewing own beloved.

(६६)

जिस प्रकार कितने भी तेज वायु के प्रवाह से, आंधियों से, वृक्ष और उसकी छाया अलग नहीं किये जा सकते, जिस प्रकार कितना भी प्रकाश गन्ने के ऊपर डालें, उसके रस को अलग नहीं कर सकते, उसी प्रकार कितने भी धर्मशास्त्रों के अध्ययन मात्र से मोह के आवरण और जीव को पृथक् नहीं किया जा सकता।

छाया और वृक्ष को अलग करने के लिए प्रकाश के स्रोत को नष्ट करना होगा, और तब हम जानेंगे कि वास्तव में छाया का तो कोई स्वतंत्र अस्तित्व कभी था ही नहीं, वह तो सर्वदा से अनित्य थी। जैसे गन्ने के रस को अलग करने के लिए बलपूर्वक मर्दन करना होगा, उसी प्रकार धर्मशास्त्रों के (मात्र अध्ययन के बजाय) निग्रहपूर्ण आचरण से ही मोह का नाश होता है और तब हम जानते हैं कि वास्तव में मोह का तो कभी कोई स्वतन्त्र अस्तित्व था ही नहीं।

Just as no one can separate the tree and its shade from the flow of strong air, from the storms, just as much light pours over the sugarcane, its juice cannot be separated, similarly just by the study of the scriptures, cover of enchantment and Jiva cannot be separated.

In order to separate the shadow and the tree, the source of light has to be destroyed, and then we will know that in reality there was never any independent existence of shadow, it was illusion forever. Just as the separation of sugarcane and it's juice has to be performed by force, in the same way the theological practice (rather than mere study) results in the destruction of attachment and then we know that in fact there was some no independent existence of attachment.

(६७)

जब तक पुण्यबल का संचय अगाध नहीं होता तब तक भगवान की कृपा नहीं होती अन्यथा उन्होंने तो दुर्योधन और अर्जुन दोनों को ही समान चयन का अवसर दिया। एक ने नारायणी सेना को चुना और दूसरे ने स्वयं नारायण को। उन्होंने तो सबों के लिए अपनी सुलभता दिखाई, लेकिन उनके प्रति समर्पण किया कुछ ही लोगों ने।

धर्मपालन से मिलता है पुण्यबल और पुण्यबल से मिलती है भगवत्कृपा। जहाँ पर अकारण ही भगवत्कृपा दिख जाए, वहां भी सन्तसेवा, संयोगवश घटित नामोच्चारण, व्रत दानादि का पुण्यबल ही मूल कारण होता है। भगवान की कृपा बदले में किसी कारण, पूजन, प्रतिकृपा अथवा उपकार की अपेक्षा नहीं रखती इसीलिए उन्हें *अकारणकरुणावरुणालय* कहते हैं।

Until the accumulation of virtuous power is deep, Bhagawan is not pleased. Otherwise, he gave both Duryodhana and Arjuna equal chance to select. One chose the Narayani army and the other chose Narayana himself. He showed his accessibility to all, but few people surrendered to him.

Practicing Dharma provide virtue and virtue gives grace of Bhagawan. Where there is grace of Bhagawan without a justified reason, it should be considered that, there is also services to saints, incidentally occurring nominations, fasting and virtue of charity behind this. The grace of Bhagawan does not require any reason, worship, antipathy or benevolence in return, that is why he is called
AkaranKarunavarunalaya
(ocean of grace, without an expectation).

(६८)

ज्ञान से ही जीवन आनंदित होता है। दु:ख का मूल अज्ञान है। ब्रह्म को ज्ञानरूप और आनन्दमय बताया गया है। ज्ञान और आनन्द का सम्बन्ध बेसन और पकौड़े का है जो आचरण रूपी तेल और सहिष्णुता रूपी अग्नि के सहयोग से बनता है।

हां, ये बात अलग है कि कुछ लोग जानकारी को ही ज्ञान समझते हैं तो कुछ लोग वाक्पटुता को, जबकि ज्ञान वह नहीं। ज्ञान वह है जिसकी परिभाषा एक छोटी मुस्कुराहट से लेकर अनन्त वेदों तक फैली हुई है।
ज्ञान आपका सत्य है... आपका अपना सत्य ...

Life is blissful with knowledge. The root of sorrow is ignorance. Brahma is said to be enlightened and blissful. Knowledge and joy are likely related to Besan and Pakora which is prepared with cooperation of oil as valid conduct and fire as tolerance.

Yes, it's another matter that some people consider understand information as knowledge and others as eloquence, while knowledge is not that. Knowledge is the definition of anything from a small smile to the eternal extends of the Vedas. Knowledge is your truth …
Your own truth …

(६९)

वर्तमान में भारतीय जनता का स्वयं कोई सिद्धान्त है ही नहीं। जैसी चली बयार, वैसा बना विचार...
आज जिसका समर्थन कर रहे हैं, कल एक छोटी बात पर विरोध प्रारम्भ कर देंगे, और फिर तीसरे दिन किसी दूसरी छोटी बात पर सिरताज बना लेंगे। इसी का लाभ चुनावी सरगर्मी में उठाया जाता है। स्मरण रहे, यह भारत है। यहाँ समाज के लिए हर जीवित व्यक्ति अधर्मी है एवं हर मृत व्यक्ति महापुरुष। मृत्यु सभी पाप धो देती है तथा जीवन प्रत्येक पुण्य छिपा देता है।

In present situation, the Indian public has no theory of its own. As the wind blows, so does the idea. Today, whom they are supporting, tomorrow they will start protesting on one small issue, and then on the third day, they will make a statement on some other thing starring the same. This is taken as advantage in electoral stirring. Remember, this is India. Here every living person is unrighteous and every dead person is a great man for society. Death washes away all sins and life hides every virtue.

(७०)

क्रोध बुरा नहीं, क्रोध के वश में विवेक का हो जाना बुरा है। काम बुरा नहीं, काम के वश में विवेक का हो जाना बुरा है। लोभ बुरा नहीं, लोभ के वश में विवेक का हो जाना बुरा है। अहंकार बुरा नहीं, अहंकार के वश में विवेक का हो जाना बुरा है। क्रोध, काम, लोभ, अहंकार, यह सब दुष्टों के संहार, संसार की वृद्धि, ज्ञान और ऐश्वर्य की प्राप्ति तथा स्वाभिमान की रक्षा में भी काम आते हैं। जब ये विवेक के अधीन होते हैं तो कल्याण कराते हैं और जब विवेक इनके अधीन होता है तो पतन कराते हैं।

Anger is not bad, it is bad to have a conscience under the control of anger. Desires are not bad, it is bad to have discretion under the control of desires. Greed is not bad, it is bad to become a conscience under the greed. Arrogance is not bad, it is bad to have a conscience under the control of ego.

Anger, action, greed, ego are essential components to destroy the wicked, in the growth of the world, in attainment of knowledge and opulence and are also useful in protecting self-respect. When they are under the conscience, they do welfare and when the conscience is under them, they make persons fall.

(७१)

ब्राह्मण के नेतृत्व में क्षत्रिय शासन करके वैश्य के धन को बढ़ाये
ताकि शूद्र सम्मान, सुख और सम्पन्नता से जीवन निर्वाह करके
बाकी तीनों वर्णों की सेवा करके उनके धर्म को पुष्ट कर सके।
यही सवर्ण (चारों वर्ण) का कर्तव्य है जो सनातनी
राष्ट्र का आधार बनेगा।

Kshatriyas under the leadership of Brahmins should increase the wealth of the Vaishyas so that the Shudras can live with respect, happiness and prosperity and can fulfill their duties by serving the other three Varnas. This is the duty of the Savarnas (the four varnas) which will form the basis of the Sanatani nation.

(७२)

युद्ध सदैव दोनों पक्षों की हानि कराता है। विजेता के लिए इस हानि को निवेश कहते हैं और हारने वाले के लिए यह दुर्भाग्य होता है। विजेता के पाप भुला दिए जाते हैं और उसके साथ ही हारने वाले के पुण्य भी। इसीलिए विजय पर ध्यान देना चाहिये ताकि दुर्भाग्य को निवेश में बदला जा सके।

War always causes loss to both sides. This loss is called investment for the winner and it is bad luck for the loser. The sins of the winner are forgotten and along with that the virtue of the loser. Therefore, attention should be paid to victory so that misfortune can be converted into investment.

(७३)

लोकतंत्र में कोई भी पार्टी देशहित के नहीं लिए होती। यहाँ पर देश ही पार्टीहित के लिए होता है। लोकतंत्र में पार्टी भूखी है और देश भोजन। जनता यहाँ थाली का काम करती है जिसके ऊपर रखकर देश को खाया जाता है। वास्तव में पार्टी और लोकतंत्र अपने आप में एक बहुत बड़ा भ्रम है जो प्रत्येक अनैतिक कार्य को नैतिकता का रंग चढ़ाता है।

In democracy, no party is for the benefit of the country. Here only the country is for party interests. In democracy, the party is hungry and the country is food. The public here serves as a plate on top of which the country is eaten. In fact, the party and democracy itself are a great illusion that color a cote of morality to every immoral act.

(७४)

छिद्रान्वेषण की एक अच्छी बात यह है कि आपको पक्षापक्ष का ज्ञान हो जाता है। आप मुखर विरोध कर सकते हैं और विरोध ही संघर्ष का आधार है, चाहे वह विरोध युद्ध के रूप में हो या फिर शास्त्रार्थ के रूप में। अच्छाई देखने वाले के साथ समस्या होती है कि वह देखने के बाद अच्छाई को हटा नहीं सकता क्योंकि इसकी आवश्यकता ही नहीं, जबकि बुराई देखने वाला उस बुराई को हटा कर उसके स्थान पर और भी अच्छाई भर सकता है।

One good thing about piercing loop of evil is that you get to know biases. You can outright protest and protest is the basis of struggle, whether it is in the form of war or in the form of debate. The problem with seeing the good is that he cannot remove the good after seeing it, because there is no need for it, whereas the evil watcher can remove the evil and fill it with more good in its place.

(७५)

धर्म का फल है मोक्ष ! उसकी सार्थकता अर्थ प्राप्ति में नहीं हे। अर्थ केवल धर्म के लिए है। भोगविलास उसका फल नहीं माना गया है। भोगविलास का फल इन्द्रियों को तृप्त करना नहीं है, उसका प्रयोजन है केवल जीवन निर्वाह। जीवन का फल भी तत्त्व जिज्ञासा है। बहुत कर्म करके स्वर्गादि प्राप्त करना नहीं है ! तत्त्ववेत्ता लोग ज्ञाता और ज्ञेय के भेद से रहित अखण्ड अद्वितीय सच्चिदानन्दस्वरूप ज्ञान को ही तत्त्व कहते हैं। उसी को कोई ब्रह्म, कोई परमात्मा और कोई भगवान् के नाम से पुकारते हैं। सगुण व्यक्ति जब तक सगुण है तब तक निर्गुण को नहीं जान सकता। इसीलिए जब तक सगुण हो तब तक मूर्तिपूजा करो, जब निर्गुण हो जाओगे तो मूर्ति के अलावा भी सर्वत्र ब्रह्म दिखेंगे।

Salvation is the fruit of Dharma ! It is not considered successful only in gaining money. Money is only to perform Dharma. Lavishes can not be considered as its fruit. The purpose of lavishes is not to satisfy the senses, its purpose is only subsistence. Curiosity to tattva is also the fruit of life. Achieving heaven by doing a lot of work is not ! The element of knowledge without deviation from the knowledgeable and known is called the essence of knowledge, as unique truthfulness. Some call him Brahma, some divine and some in the name of Bhagawan. A virtuous person cannot know Nirguna as long as he is virtuous. That is why do idolatry till you have virtue, when you become nirgun, then apart from the idol also, Brahma will be seen everywhere.

(७६)

केवल संत ही नहीं, स्वयं सत्वयुक्त नारायण भी क्रोध करते हैं। क्रोध से दण्ड संचालित होता है और दण्ड ही मर्यादा की रक्षा करता है। यदि इस हेतु क्रोध का सन्तुलित प्रयोग हो रहा है तो कोई दोष नहीं।

Not only the saints, but the most pious Narayan also becomes angry. Punishment is governed by anger and punishment protects dignity. If there is a balanced use of anger for this, then there is no fault.

(७७)

धर्मयुद्ध में पक्ष और विपक्ष का सूक्ष्मता से ज्ञान होना आवश्यक है। कभी कभी नारायणी सेना भी दुर्योधन की ओर से लड़ने लगती है तो कभी कभी धृतराष्ट्रपुत्र युयुत्सु ठीक युद्ध से पूर्व युधिष्ठिर की ओर सम्मिलित हो जाता है। कुछ लोग बलराम और विदुर की भांति सक्षम होते हुए भी सद्भावना से कारण दोनों पक्षों को छोड़ देते हैं तो कुछ लोग रुक्मी की भांति दुर्भावना से कैतवलीला (कपट वंचना) करते हैं।

In the war of Dharma, it is necessary to have subtle knowledge of the sides and the opposition. Sometimes the Narayani army also starts fighting on behalf of Duryodhana, sometimes Yuyutsu, son of Dhritarashtra joins Yudhishthira right before the war. Some people, while being capable, like Balarama and Vidur, leave both sides due to goodwill, and some people do *kaitava-lila* (deceit) like Rukmi.

(७८)

अश्रुत को श्रुत, अदृष्ट को दृष्ट, अचिंत्य को चिंत्य, अनागत को आगत, अज्ञात को ज्ञात एवं अगम्य को गम्य जो बनाये, वह योग है। शरीर को अंगों को विशेष कोण प्रतिकोण से अभिनीत करने को योग नहीं, व्यायाम कहते हैं। व्यायाम शरीर को तथा योग चेतना को शुद्ध एवं स्वस्थ रखता है। व्यायाम योग का एक स्थूल अंशमात्र है। योग के सभी जन अधिकारी नहीं हैं क्योंकि यह केवल सत्वयुक्त पवित्रात्माओं के लिए ही है।

That which makes unheard as the heard, the unseen as the vision, the unthinkable as the contemplative, the absent as the input, the unknown as the known and the inaccessible as the accessed is called Yoga. Posing body parts and reflecting them with different angles might be called exercise. It is not yoga to act. Exercise keeps the body pure and healthy while yoga does the same to consciousness. Exercise is a outer part of yoga. Not all people are eligible for yoga because it is only for the saints with pure soul.

(७९)

मृत्यु दुःख का विषय नहीं है। दुःख का विषय यह है कि मृत व्यक्ति का पुनर्जन्म हो जाये। इस संसार में मनुष्ययोनि अत्यंत दुर्लभ है तथा इसे प्राप्त करके मोक्षमार्ग के लिए प्रयत्न न करना घोर दुर्भाग्य है। मृत्यु और जन्म का कष्ट इस संसार में सबसे अधिक दुःखदायक है। पुनर्जन्म न होना ही मृत्यु की सार्थकता है।

Death is not a matter of sorrow. The matter of sorrow is that the dead person should be reborn. In this world, human birth is extremely rare and after achieving this, it is a great misfortune not trying for salvation. The suffering of death and birth is the most painful in this world. Not being reborn is the true tribute to death.

(८०)

आत्मेच्छा की पूर्ति हेतु प्रकृति के तत्वों का आश्रय लेकर अपनी शक्ति के उपयोग से किया गया परिवर्तन ही कर्म है। श्रीमद्भगवद्गीता के आठवें अध्याय के तीसरे श्लोक के अनुसार सृष्टि ही कर्म कहाता है।

भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः॥

क्योंकि शेष सभी अन्य कर्म इसी के बाद सम्भव हैं। सृष्टि से पूर्व एवं प्रलय के पश्चात् कर्म नहीं होता इसीलिए मुख्य कर्म तो सृष्टि ही है। यह सृष्टि इच्छा से उत्पन्न है इसीलिए कर्म भी इच्छा के आधार पर किया गया उपक्रम ही है।

Karma is the change made by the use of our power by taking shelter of the elements of nature to fulfill self-interest. According to the third verse of the eighth chapter of the Srimad Bhagavad Gita, creation itself is called karma.

Because all the other deeds are possible after this. Karma does not happen before the creation and after the holocaust, that is why the main action is the world itself. This creation originates from desire, hence karma is also an undertaking done on the basis of desire.

(८१)

आपका यह जीवन एवं आपका स्वप्न दोनों ही सत्य हैं। आपकी जागृत अवस्था में भौतिक शरीर एवं स्वप्न में सूक्ष्म शरीर सक्रिय होता है। दोनों को संचालित करने वाला तत्व जीवात्मा ही है इसीलिए दोनों ही सत्य हैं। और यदि आप स्वप्न को असत्य मानते हैं, कल्पना या चिद्विलास मानते हैं तो स्मरण रहे, यह सम्पूर्ण संसार, जिसे आप वास्तविक समझ रहे हैं, वही स्वयं में ही एक बहुत बड़ा असत्य है, कल्पना है, चिद्विलास है। इसीलिए जागृति और स्वप्न दोनों का महत्व समान है। दोनों समान रूप से सत्य भी हैं एवं असत्य भी।

Both this life and your dream are true. The physical body is activated in your awakened state and the subtle body in your dream. The element that governs both is the soul, hence both are true. And if you believe the dream to be untrue, to be a fantasy or a Chidwilas, then remember, this whole world, which you are realizing, is itself a very untrue, imagined, Chiwdilas. That is why both awakening and dreaming have the same importance. Both are equally true and untrue.

(८२)

समय कितना गया यह महत्वपूर्ण नहीं। समय कहाँ गया यह महत्वपूर्ण है। समय का महत्व उसकी मात्रा से नहीं, कार्यनिष्पादन से है। समय का कार्य लोक का नाश करना है। पंचमहाभूतों से निर्मित विश्व का संहार करने का कार्य समय का है। जड़ पर उसका प्रभाव होता है, चेतन पर नहीं। किंतु जो चेतन स्वयं को जड़ समझ बैठे हैं वे इसके प्रभाव में फंस ही जाते हैं।

How much time was spent is not important. Where time was spent is important. Time is important not by its quantity but by its performance. The task of time is to destroy the world. The task of time is destroying the world made of five great elements. It has influence on the non-livings, not on the conscious. But those who are conscious, but consider themselves as non-livings are stuck under its influence.

(८३)

इस संसार की विचित्रता कुछ इस प्रकार से है कि लोग जीवित व्यक्तियों के साथ शव के जैसा व्यवहार करते हैं एवं शवों के साथ जीवित व्यक्ति के समान। वे जीवितों के साथ घृणा करते हैं और शवों के साथ प्रेम का प्रदर्शन। जीवित के साथ जीवित एवं मृत के साथ मृत जैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

किसी भी व्यक्ति के साथ उसके जीवित रहते ही प्रेम, दया और सम्मान का व्यवहार करने में सार्थकता है। मृत्यु के पश्चात् उसके शव के साथ जैसा प्रेम, मोह, सम्मान और अपनापन दिखाने में लोग प्रयत्न करते हैं, वैसा ही व्यवहार जीवित रहते ही होने लगे तो यह संसार सुखी एवं प्रसन्न हो जाएगा।

The strangeness of this world is such that people treat living persons like dead bodies and bodies as living beings. They show hatred with the living and show love for dead bodies. The living should be treated like the living and the dead should be treated like the dead.

It is worthwhile to treat any person with love, kindness and respect as they live. After death, people try to show love, fascination, respect and familiarity with their dead bodies, this world will be happy and content if the same behavior starts happening with the living.

(८४)

व्यक्ति, प्रशंसा और अहंकार का सम्बन्ध दूध, खटाई और दही जैसा है। जैसे दूध खटाई आदि से विकृत होकर दही बन जाता है, वैसे ही जिस व्यक्ति की अधिक प्रशंसा उसके ही सामने होती है, वह अहंकार से युक्त हो जाता है। प्रपञ्चसार तन्त्र के अनुसार प्रकृति जब जीव के साथ कर्ताभाव से युक्त होती है तो अहंकार तत्व का सृजन होता है। यहां तक तो ठीक है, दही के भी अपने गुण हैं, अपने उपयोग हैं। वैसे ही अहंकार के भी अपने महत्तात्विक गुण और उपयोग हैं। किंतु यदि दूध की विकृति से उद्भूत उस दही का बराबर मंथन न किया जाए, तो उसमें कीड़े निकल आएंगे और दही का नाश कर देंगे, जबकि उचित रीति से मंथन की गई दही क्रमशः घृत में परिणत हो जाती है, जो भोजन, पूजन, औषधि, प्रकाशक आदि अनेक कार्यों में उपयोगी होती है। उसी प्रकार सत्पुरुष को चाहिए कि प्रशंसा के कारण उत्पन्न अहंकार का मंथन निरंतर करता रहे, करता रहे, अन्यथा वह कलुषित होकर पतित हो जाएगा। बार बार मथे गए अहंकार से भी उत्साह, आत्मबल तथा दृढ़संकल्प आदि गुणों की उपलब्धि होती है जो मुमुक्षु के योगाभ्यास में सहायक होते हैं और घृत के समान अनेक कार्यों में उपयोगी होते हैं।

The relation of person, praise and ego is like milk, sourness and curd. Just as milk becomes deformed by souring, etc., the person who has more praise in front of him becomes ego-rich. According to the *Prapanchasar Tantra*, when nature is associated with the soul with feeling of doer, the ego element is created. Even so, yogurt also has its own merits and uses. Similarly, the ego also has its own important qualities and uses. But if the curd arising out of the deformity of milk is not churned, insects will come out of it and the curd will be destroyed, while the properly churned curd gets progressively turned into butter, which is useful in many functions, like for food, worship, medicine, lightener etc. In the same way, gentleman should constantly churn the ego arising due to praise, otherwise he will become impure and impure. Repeated ego also leads to the achievement of the qualities of enthusiasm, self-confidence and determination, which are helpful in the practice of salvation and are useful in many tasks like the butter.

(८५)

संसार में केवल काल की शक्ति ही वास्तव में शक्ति है। ज्ञान, बल, बुद्धि, धन आदि सब इसी के भेद है। इसे सामर्थ्य कहते हैं। सामर्थ्य के ही भेद ज्ञान, बुद्धि, धन आदि हैं। अपने अपने समय पर ही सभी उपयोगी सिद्ध होते हैं।

सामर्थ्य समय ही है, जो सबसे प्रबल है। उसके ही कारण ज्ञान, बुद्धि या धनादि का बल सफलतापूर्वक कार्य करता है, अन्यथा समय विपरीत होने पर बुद्धिमान, पराक्रमी या धनवान भी नष्ट हो जाते हैं इसीलिए सबसे बड़ा काल ही है।

In the world, only the power of time is power in real. Knowledge, strength, intelligence, wealth etc. are all distinctions of the same. This is called strength. Knowledge, intelligence, wealth etc. are the only differences of power. All are subject to be proved useful on their own time.

Time is the strength, which is most powerful. Due to this, the force of knowledge, intelligence or wealth works successfully, otherwise wise, mighty or even rich are destroyed when the time is opposite, that is why time is the greatest.

(८६)

आपको कई बार जो मिलता है, क्या उसके बारे में आपको मेहनत करनी पड़ती है ? कई बार जो मिला क्या वास्तव में वो आपने अपने परिश्रम से पाया ? कई बार बहुत कुछ बिना किये मिलता है, कई बार करने के बाद भी नहीं मिलता। जीवन खेती की तरह है। यहां किसान का परिश्रम ही पर्याप्त नहीं हैं। बीज की गुणवत्ता, खेत की उर्वरता, मौसम का हाल और फसल की सुरक्षा भी आवश्यक है। परिश्रम एवं भाग्य, दोनों एक ही रथ के दो पहिये हैं, एक के बिना दूसरा व्यर्थ है। दोनों साथ मिलकर सफलता को जन्म देते हैं। जीवन में केवल परिश्रम ही नहीं, सही समय, सही स्थान, सही दिशा और सही नियोजन भी आवश्यक है। सबसे बड़ी बात, आज का फल कल ही मिले, आवश्यक नहीं। क्योंकि धान की फसल चार महीने में तैयार होती है जबकि गन्ने की फसल एक साल में। आज जो आम खा रहे हैं, वो बीस वर्ष पहले लगाया गया था। आज जो आम लगाया है, वो बीस वर्ष बाद फलेगा। हाँ, ये बात अवश्य है कि प्रत्येक कर्म आम ही नहीं होता, वो मिर्च भी हो सकता है, शीघ्र फलित हो सकता है, किन्तु प्रत्येक कर्म मिर्च भी नहीं होता, आम भी हो सकता है। यही प्रारब्ध है, ऐसा ही जीवन भी है।

Do you have to work hard for what you get many times? What you got many times, did you get exactly through your hard work ? Many times a lot is achieved without doing anything and many times, nothing is achieved even after doing hard work. Life is like farming. Farmer's hard work here is not enough. Seeds' quality, farm-fertility, weather conditions and crop protections are also essential. Diligence and luck are both two wheels of the same chariot, the other without one is meaningless. Together they lead to success.

Not only hard work in life but right time, right place, right direction and right planning is also necessary. And the biggest thing, it's not necessary that results for today's work should be received tomorrow. Paddy crop is ready in four months while sugarcane is harvested after one year. The mangoes we are eating today were planted twenty years ago. The mangoes planted today will flourish after twenty years. Yes, it is a matter that every karma is not like mango, it can also be chilly, can be fruitful soon, but also not every karma is like chilly, it can also be like mango. This is destiny and so is life.

(८७)

बहुत सी परिस्थितियों का सामना करके व्यक्ति जब उनसे आगे निकल जाता है, तो उन परिस्थितियों के अवशेषों की छाया उसके व्यक्तित्व पर स्पष्ट दिखने लगती है। जिसके अतीत की गति वर्तमान से अधिक है, उसके अतीत के अवशेष घूम घूम कर सामने आ जाते हैं।

अतएव मुझे अपने भविष्य की गति अतीत से अधिक बढ़ानी होगी, ऐसा विचार कर विवेकपूर्ण निर्णय लेने वाला व्यक्ति ही महानता के शिखरों का स्वर्णिम अनुभव कर पाता है। अतीत का अस्तित्व मात्र शिक्षा एवं उचित प्रेरणा को ग्रहण करने के लिए बचाकर रखे, उसके चिंतन का परिणाम अवसाद में नहीं, उत्साह में दिखना चाहिए।

By facing many situations, when a person goes ahead of them, then the shadow of the remnants of those situations starts to cast clearly on his personality. The remnants of their past, whose speed is greater than the present, repeat in a loop.

Therefore, only a person who takes a wise decision and considers that 'I have to increase the pace of my future more than the past', is able to experience the pinnacle of greatness. The existence of the past should be preserved only to receive education and proper motivation, the result of its contemplation should be seen in enthusiasm, not in depression.

(८९)

जितने भी लोगों का नाम आज के विद्यालयों में समाज सुधारक के नाम से पढ़ाया जाता है, वे सभी समाज के प्रदूषण थे। उन सबों को विदेशी म्लेच्छों से पर्याप्त धन मिलता था और साथ ही उनका एकमात्र उद्देश्य सनातन धर्म की मूल सामाजिक समरसता एवं संरचना पर ही आघात करना था। हमारा समाज पहले से ही सुधरा हुआ था। मछली को डूबने से बचाने के नाम पर पानी से निकालने की प्रक्रिया को समाज सुधार नहीं कहते।

All the people whose names are taught in today's schools in the name of social reformers, they were all the pollution of the society. All of them used to get sufficient funds from foreign *mlechchhas* and at the same time their sole purpose was to attack the basic social harmony and structure of Sanatan Dharma. Our society was improved already. The process of removing fish from water in name to save it from drowning is not called social reform.

(९०)

जो विमोह स्वाभाविक हो, वह वैराग्य है किन्तु जो विमोह परिस्थितियों से उत्प्रेरित हो, वह विरक्ति है। अपेक्षाओं के पूर्ण न होने से विरक्ति होती है, इसमें एक बड़ा अंश ग्लानि, क्षोभ और निराशा का होता है। अपेक्षाओं के पूर्ण हो जाने पर, उनकी समाप्ति पर, वैराग्य होता है, जिसमें एक बड़ा अंश ज्ञान, सन्तोष और चिदानंद का होता है। विरक्ति अस्थायी होती है, क्योंकि उसे परिवर्तनशील परिस्थितियों ने बनाया है, जबकि वैराग्य शाश्वत होता है, क्योंकि उसे कूटस्थ, अचल एवं ध्रुव आत्मबोध के स्वभाव ने बनाया है।

What is detachment by nature is *vairagya*, but that which is stimulated by transgressive circumstances is *virakti*. Virakti caused by non-fulfillment of expectations has a large part of remorse, frustration and despair. When the expectations are met, at the end of them, the disinterest leads to *vairagya*, with a large part of knowledge, contentment and Chidananda. *Virakti* is temporary, because it has been created by changing circumstances, while *Vairagya* is eternal, because it has been made by the nature of unaffected, immovable and firm by self-realization.

(९१)

वर्तमान ब्रह्मा ने वेदों की ग्यारह सौ से अधिक शाखाएं प्राप्त की हैं। उनमें से अपनी योग्यता के अभाव में हम ९९% खो चुके हैं। बचे १% में भी उसके ९९% का सही अर्थ, भाव, उद्देश्य, सन्दर्भ जानने की इच्छा एवं परिश्रम नहीं बचा रखी है लोगों ने। इसीलिए अयुतांश के आधार पर वेदों में ये नहीं, वो नहीं कहना घोर अधर्म है। सागर की गहराई जानने के लिए उसके पानी को बोतल में बंद करके नहीं पता लगा सकते।

The present Brahma has attained more than eleven hundred branches of the Vedas. We have lost 99% of them due to lack of qualification. Even in the remaining 1%, people have not left the desire and hard work to know the true meaning, sentiment, purpose, context of 99% of it. That is why, it is not in the Vedas on the basis of imputation, to say that it is gross iniquity. To know the depth of the ocean, we cannot find out its water by bottling it.

(९२)

हमारे महाभारत आदि इतिहास, रुद्रयामल आदि तन्त्र, श्रीमद्भागवत आदि पुराण, मनु आदि स्मृति ग्रंथों में जो भी बातें हैं, सबका आधार वेद ही है इसीलिए उनमें लिखी बातों को अक्षरशः वेद ही जानिए आप। कोई मात्र संहिता भाग को ही वेद बताकर कहें तभी वेद है, ऐसा नहीं है, क्योंकि संहिता भाग तो अब एकदम सूक्ष्म हो गया है। जो वेदसम्मत ग्रन्थ के रूप में सुप्रतिष्ठित हैं, उनकी वाणी भी वेद ही का वाक्य समझिए क्योंकि वे वेदों की ही बात कहते हैं।

Our Itihas like Mahabharata, Tantra like Rudrayamal, Puranas like Shrimad Bhagwat, Puranas, Smritis like Manu, all these texts are based on Vedas, that's why they must be considered literally like Vedas. One can say that only the Samhita portion is Veda, but that is not accurate because the Samhita part is now very subtle. Those texts which are well-established as recognised from Vedas, should be considered as words of the Vedas as they speak the same as the Vedas.

(९३)

किसी की भी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। हो रही है, यही समस्या है। न हो, यह समाधान है। वेदों का वचन है - मृत्योर्मामृतं गमय। केवल देहत्याग की मृत्यु संज्ञा नहीं है। मृत्यु वह तब होगी, जब उसके साथ जुड़े शेष कर्मफलों के कारण पुनर्जन्म आवश्यक हो। देहत्याग शरभंग जी का भी हुआ, लेकिन वह मृत्यु नहीं, मोक्ष था।

मृत्यु तब होती है जब इसके बाद पुनर्जन्म हो। यदि पुनर्जन्म न हो, कर्मफल का क्षय हो गया, तो मोक्ष है। इसीलिए मृत्यु नहीं, मोक्ष होना चाहिए। दोनों के लिए देहत्याग तो एक नैसर्गिक एवं आवश्यक निमित्त है, वह अवश्यमेव होगा। देहत्याग के बाद नया देह मिलने का अर्थ है कि कर्मफल शेष था। कर्मफल के रहते निर्विशेषता की प्राप्ति नहीं होती।

No one should die. They are dying, this is the problem. No death, is the solution. The word of the Vedas is – *Take me away from death to eternity.* Leavig the body is not death. Death is when rebirth is necessary because of the remaining *karma* associated with it. *Sharabhang* also left his body, but it was salvation, not death.

If there is a rebirth, there is a death. If there is no rebirth, the karma is over, then there is salvation. That is why there should be salvation, not death. For both, leaving the body is a natural and necessary cause, it will definitely be there. If a new body is provided after leaving the previous one means that the net of the Karma was remaining, while it is in existence, no one can become eternal.

(९४)

भक्तिमार्ग की पराकाष्ठा ही ज्ञानमार्ग है। भक्ति मार्ग है एवं ज्ञान लक्ष्य है। ज्ञानमार्ग का आरम्भ ही भक्तिमार्ग से होता है। भक्ति का उद्देश्य ही ज्ञानप्राप्ति है। भक्तिरहित व्यक्ति को ज्ञान नहीं होता। ज्ञान भक्ति का परिणाम है और यदि भक्ति के बाद ज्ञान नहीं हुआ तो भक्ति अधूरी या दूषित है।

The path of devotion is the path of knowledge. Devotion is the path and knowledge is the goal. The path of knowledge begins at the path of devotion. The purpose of devotion is enlightenment. A person without devotion does not have knowledge. Knowledge is the result of devotion and if there is no knowledge after devotion, devotion is incomplete or corrupt.

(९५)

शिक्षा की परम्परा इस संसार की सबसे अधिक निःस्वार्थ परम्परा है। कोई भी व्यक्ति नहीं चाहता कि उनके नीचे रहने वाला व्यक्ति उससे अधिक पराक्रमी हो जाये, उससे अधिक सुंदर या धनी हो जाये किन्तु शिक्षक सर्वदा यही चाहता है कि उसका विद्यार्थी उससे भी अधिक निपुण एवं योग्य बने। गुरु शिष्य की परंपरा भारत के गौरवशाली महत्ता की परिचायिका है।

The tradition of education is the most selfless tradition in this world. No person wants the person living below them to be more powerful, more beautiful or wealthier than him, but the teacher always wants his student to be more efficient and capable than him. The tradition of Guru Shishya is an introduction to the glorious importance of India.

(९६)

आजकल बिना योग्यता परखे सभी जनों को केवल प्रतियोगिता एवं प्रतिद्वंद्वीभाव से एक समान रटी रटाई शिक्षा देने का चलन फैल रहा है जिससे विद्या की गुणवत्ता बाधित होती है। प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव को, गुण एवं दोषों को, इच्छा एवं उद्देश्य को भली भांति समझकर ही विद्या का दान करना चाहिए।

Now-a-days the practice of giving uniformly rote education to all people without merit is only given to competition and rivalry, which disrupts the quality of learning. The nature, virtues and demerits, desire and purpose of every person should be understood before providing knowledge.

(९७)

ज्ञान वह दीपक है, जिसमें उत्तम अक्षरों की बत्ती बनाकर, मधुर स्वर का तेल डालकर, तब उत्तर रूपी इंधनाग्नि का सहयोग कराने से ही वह प्रकाशित होता है। ज्ञान गहन मन्थन का विषय है। यह परिश्रम, सौभाग्य और निष्ठा से ही प्राप्त होता है।

Knowledge is the lamp in which it is illuminated only by making light of excellent letters, adding sweet vowel oil, and then supporting the fuel of the answer, it burns. Knowledge is a matter of deep meditation. It is obtained only through hard work, good luck and loyalty.

(९८)

सतही सूचना को ज्ञान नहीं कहते। हम किसी को संगीत के स्वर बता दें, तैरने की विधि बता दें, भोजनादि की विधि बता दें तो वह सतही जानकारी होगी किन्तु इससे वह ज्ञानी नहीं हो जायेगा, जब तक उसमें विधि अनुसार निरंतर परिश्रम, निष्ठा एवं सौभाग्य का नियोजन नहीं होता।

Superficial information is not called knowledge. If we tell someone the tone of the music, tell the method of swimming, tell the method of cooking, then it will be superficial information, but it will not become knowledgeable unless it employs constant hard work, loyalty and good luck according to the ordinance.

(९९)

विदेशी मान्यताओं वाले अपना मातम गुड फ्राइडे और मुहर्रम को मनाते हैं। हिन्दू अपना धार्मिक शोक कब मनाते हैं ? कभी नहीं। क्योंकि धर्म का अर्थ ही है शोक-सन्ताप से मुक्ति। आंतरिक प्रसन्नता धर्म से ही सम्भव है। हम केवल उत्सव मनाते हैं। किन्तु वर्तमान स्वार्थपूर्ण नेताओं के कारण उत्सव के अवसर क्षीण होते जा रहे हैं।

Those with foreign beliefs celebrate their mourning on Good Friday and Muharram. When do Hindus celebrate their religious mourning? Never. Because Dharma means freedom from mourning. Internal happiness is possible only through Dharma. We only celebrate. But due to the selfish leaders of present, the festive occasions are getting diminished.

(१००)

आपमें एकता भौतिक समानता से नहीं, वैचारिक समानता से आएगी। भौतिक समानता न सम्भव है, न वांछनीय। आपमें एकता न भी हो तो ये कोई बड़ी समस्या नहीं है।
बड़ी समस्या तब होती है, जब इस बात की भनक आपके विपक्षी को लग जाये।

Unity in you will come not from physical equality, but from ideological equality. Physical equality is neither possible nor desirable. Even if you do not have unity, it is not a big problem. A big problem occurs when your opposition gets to know about it.